फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

★ Reflections on Marx's Critique of Political Economy
★ a ballad against work
★ Self Activity of Wage-Workers: Towards a Critique of Representation & Delegation
The books are free

नई सीरीज नम्बर 135 सितम्बर 1999

हाल - चाल यह है

ईस्ट इंडिया कॉटन मिल मजदूर : "पढा - लिखा हूँ। अपने आस-पास 6 साल झख मार कर यहाँ आया था। नौकरी लग गई और परमानेन्ट भी हो गया पर अब तीन साल से फैक्ट्री में तालाबन्दी है। अभी 40 का भी नहीं हुआ हूँ पर 60 साल का लगता हूँ। हर व्यक्ति अपने-अपने दायरे में रह कर खोपड़ी खराब कर रहा है। लोग पशु से भी गये गुजरे हो रहे हैं। यह जो पढ़ाई-लिखाई है यह भी अब दस साल की मेहमान है क्योंकि इस से कोई फायदा नहीं होता। आप ने जो हाल-चाल पूछा उसका यह जवाब है।"

दुकान कर्मचारी : " 10-15 साल काम करने के बाद दुकानों पर काम करते हम मजदूरों को 2000-2200 रुपये देते हैं लेकिन ड्युटी 14 घन्टे प्रतिदिन और कोई छुट्टी नहीं। दुकान में काम करते हुये चोट लग जाती है तो मालिक कोई जिम्मेदारी नहीं लेते – एक पैसा नहीं देते और हमें अपना इलाज खुद कराना पड़ता है। मालिक हर समय हमें चोर के तौर पर देखते रहते हैं। काम छोड़ कर दूसरी जगह जाते ही मालिक लोग फौरन चोरी का आरोप लगा देते हैं और वहाँ काम नहीं करने देते। जरा-जरा सी बात पर माँ-बहन की गाली देना इन मालिकों का परम धर्म है। अगर अपने किसी भाई का काम हम बाहर सस्ते में करवाते हैं तो पता चलते ही मालिक पाबन्दी लगाते हैं।"

अप्रेन्टिस वरकर : " हम काम सीखने के लिये फैक्ट्री में भेजे गये हैं लेकिन **गुडईयर** मैनेजमेन्ट हम से दबा कर प्रोडक्शन लेती है। हमारे साथ बर्ताव भी बहुत बुरा करते हैं – अप्रेन्टिसों से कैजुअल वरकरों की तरह व्यवहार करते हैं। भत्ते में जो 200 रुपये बढे हैं वे भी हमें गुडईयर में नहीं देते।"

एस पी एल मजदूर : " 2 साल से ऊपर हो गये हैं काम करते – पी. एफ. कटता है पर पर्ची आज तक नहीं मिली है। हाजरी भी रफ पर लगाते हैं तथा ई. एस. आई. कार्ड भी नहीं दिया है। हर रोज 12 घन्टे काम करना पड़ता है। काम, खाना और सोना के अलावा हम कुछ भी नहीं सोच सकते।"

कैजुअल वरकर : " इस समय **एस्कोर्ट्स एनसीलरी** में हूँ। कैजुअलों की जिन्दगी तो बड़ी गई-गुजरी है। किसी सोर्स से भर्ती हुआ। यहाँ 1800 रुपये महीना देते हैं पर 5 छुट्टी के पैसे भी उसी में से काट लेते हैं। फन्ड व ई. एस. आई. के पैसे उसी में से काट लेते हैं। फन्ड का क्या फायदा ? दो-चार महीने के बाद दूसरी जगह नौकरी ढूँढो और फन्ड के लिये चक्कर काटो।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : " मैनेजमेन्ट तँग करने में जुटी है पर हम वरकर भी अपनी पर हैं। हम मना भी नहीं करते और करके देते भी नहीं। कहते हैं कि यहाँ काम करो, वहाँ काम करो तो चले जाते हैं पर काम अपने ढँग से ही करते हैं।"

कॉमेट हाइड्रोलिक्स मजदूर : " किस कम्पनी में क्या हो रहा है का पता चल जाना अच्छी बात है। लेकिन सिर्फ यह जानने से बाजा नहीं बजता कि किस कम्पनी में मजदूर किस तरह पिट रहे हैं। हमें यह भी जानने की जरूरत है कि उन हालात में वरकर क्या करें। मैनेजमेन्टों से कैसे निपटें की चर्चायें जरूरी हैं।"

गवर्नमेन्ट प्रेस वरकर : " रिटायर होते मजदूरों की जगह नई भर्ती नहीं कर के ठेकेदारी तथा अप्रेन्टिसों से काम चलाते हैं। अप्रेन्टिसों को उनकी जॉब की ट्रेनिंग देने की बजाय प्रोडक्शन में लगा देते हैं। परमानेन्ट करने का लालच दे कर अप्रेन्टिसों से दो साल की अप्रेन्टिसशिप में परमानेन्ट से भी ज्यादा काम करवाते हैं और फिर उन्हें चलता कर देते हैं।"

थॉमसन प्रेस मजदूर : " हाल बहुत खराब है। बीस-बीस साल सर्विस करने के बाद लगता है खाली हाथ ही जाना पड़ेगा। मैनेजमेन्ट के 20-25 दल्लों के डर से वरकर बिल्कुल चुप रहते हैं। अन्दर ही अन्दर घुटते रहते हैं। गुण्डा राज है। पाँच-छह साल कैजुअल रखने के बाद मुश्किल से परमानेन्ट किया और अब कम्पनी ने फिर वी आर एस लगा रखी है। कहने को स्वेच्छा से पर असल में जबरन निकालने वाली बात है। नौकरी छोड़ी तो फिर दूसरी नौकरी कहीं मिलेगी नहीं। दादागिरी से कैसे निपटें का सवाल हम वरकरों के सामने हर समय रहता है।"

एस्कोर्ट्स वरकर : " शॉकर डिविजन में 30 जून से 127 वरकरों को बैठा कर रख रहे हैं। कह रहे हैं कि अभी काम नहीं है, कहीं एडजस्ट करेंगे। असल में वी आर एस के लिये दबाव डाल रहे हैं। मजबूरन 30 लोगों ने नौकरी छोड़ दी है। वालेन्टरी नहीं बल्कि कम्पलसरी रिटायरमेन्ट स्कीम है।

" मशीन ब्रेक डाउन हो, चाहे माल न हो, चाहे रोलर फुल हो रहा हो – मैनेजर कहते हैं कि हम कुछ नहीं जानते, आई. ई. नोर्म्स के हिसाब से माल दो। और फार्मट्रैक कैन्टीन में रोटियाँ ऐसी देते हैं कि उन्हें चबाने में गधों को भी पसीना आ जाये।

" रेलवे डिविजन में वरकरों के संग-संग स्टाफ के लोगों को भी बैठा कर रख रहे हैं। जिन वरकरों से मैनेजमेन्ट काम करवा रही है उनकी 50 प्रतिशत तक तनखा काट ली है, 4500 रुपये तक काटे हैं।

" मोटर साइकिल बहुत जमा हो गई हैं। उत्पादन की जरूरत ही नहीं है। सुना है कि 27/8 से 2/9 तक फैक्ट्री बन्द रहेगी – तीन छुट्टी वरकरों की खायेंगे। ऑफ सीजन तो यह हर साल होता है पर बन्द पहली बार कर रहे हैं। सूरजपुर प्लान्ट को भी बन्द करेंगे। लेकिन किस को बुद्धु बना रही है मैनेजमेन्ट ? आई. ई. नोर्म्स करो – उत्पादन बढाओ ! माल बिक नहीं रहा और करोड़ों रुपया ब्लॉक हो गया है। वेन्डर्स की

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये।

★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों व मोहल्लेवासियों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने ले जाइये।

★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

इनके कानून, इनके अमल

● सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देने पर कैद की सजा, हरियाणा में इस समय न्यूनतम वेतन 2100 रुपये महीना; ● 37-40 दिन काम करने के बाद 30 दिन की तनखा महीने की 7-10 तारीख से पहले; ● तीन महीने में ज्यादा से ज्यादा 50 घन्टे ओवर टाइम काम; ● साप्ताहिक छुट्टी; हाजरी कार्ड, प्रोविडेन्ट फन्ड, ई.एस.आई. कार्ड; ● ओवर टाइम काम की पेमेन्ट डबल रेट से; आदि-आदि-आदि।

पी डब्लू डी (बी एण्ड आर एन.एच. 2) वरकर : "आधा अगस्त भी निकल गया है पर अप्रैल 99 से कोई तनखा नहीं दी है।"

नूकेम मजदूर : "अगस्त भी निकल गया और एन एम टी एल तथा आर एण्ड डी वरकरों को जून तक की तनखा नहीं दी है। काम जोरों पर है लेकिन मैनेजमेन्ट कहती है कि पैसे नहीं हैं। महीने में चौथी बार पाँच मिनट लेट हो जायें तो मैनजेमेन्ट एक दिन की तनखा काट लेती है और वार्निंग लैटर ऊपर से पकड़ा देती है। वेतन लेट पर ?"

झालानी टूल्स वरकर : "21 महीनों की तनखा तो पहले ही बकाया थी। इधर भारी कटौतियों के बाद जी वेतन दे रहे हैं उसका भी यह हाल है कि आज 19 अगस्त तक जून का भी वेतन नहीं दिया है।"

टेकमसेह मजदूर : "फैक्ट्रियों के लीडर तो प्रधानमन्त्री से भी ज्यादा बदमाश हैं।"

साहनी सिल्क वरकर : "हमें जून का वेतन 28 जुलाई को जा कर दिया। स्टाफ को तो मई की तनखा भी अभी तक नहीं दी है।"

पोली मेडिक्युअर मजदूर : "हर रोज 12 से 14 घन्टे जबरन ड्युटी करवाते हैं। रक्षा-बन्धन के दिन भी छुट्टी नहीं दी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से ही देते हैं और वह भी दो महीने बाद। लड़कियों से भी हर रोज 9-10 घन्टे ड्युटी करवाते हैं।"

स्टड्स हेल्मेट वरकर : "12-12 घन्टे की ड्युटी कर दी है – रोज जबरन 4 घन्टे ओवर टाइम। और चर्चा ले ऑफ की शुरू कर दी है।"

ग्लोब कैपेसिटर मजदूर : "अखबार में जो 1500 रुपये वेतन की बात लिखी है वह गलत है। हमें तो 1200 रुपये महीना ही मिलते हैं।"

युनीक ट्रान्समीशन वरकर : "70 में से 8-10 ही परमानेन्ट हैं। कैजुअलों को 1200 रुपये तनखा देते हैं। लेबर विभाग को पैसा बन्धा है – अधिकारी आते और जाते रहते हैं।"

सुपर अलॉय कास्ट मजदूर : "4-5 साल से काम कर रहे वरकर कैजुअल ही बना कर रखे हैं। मैनेजमेन्ट ने ठेकेदारी शुरू करने की कोशिश की तब परमानेन्ट और कैजुअल वरकरों ने मिल कर विरोध किया – ठेकेदारी शुरू नहीं करने दी, भगा दिया।"

सुपर स्विच मजदूर : "तनखा 20-22 तारीख को जा कर देते हैं। कैजुअल वरकर 150 हैं और उन्हें 1000-1100 रुपये ही वेतन देते हैं। कैजुअलों को न ई.एस.आई. कार्ड देते हैं और न फन्ड की पर्ची।"

नगर निगम वरकर : "हम से 12-14 घन्टे की ड्युटी लेते हैं पर कोई ओवर टाइम पेमेन्ट नहीं देते। 1996 का पाँचवें वेतन आयोग का फैसला अभी तक लागू नहीं किया है।"

शर्मा इंजिनियरिंग मजदूर : "12 घन्टे की ड्युटी है। नयों को 1200 और पुरानों को 1600 रुपये वेतन देते हैं। बोलो तो गाली और धक्के। हम लोग यूनियन बनाने की सोचते हैं पर देखते हैं कि यूनियनें भी मैनेजमेन्टों की जेब में हैं। हम आपस में चर्चा करते हैं।"

परफैक्ट पैक वरकर : "ई. एस.आई. कार्ड परफैक्ट पैक के नाम से और कागजों में हम लक्ष्मी इलेक्ट्रिकल के मजदूर हैं। हम से कोरे कागजों पर हस्ताक्षर करवा रखे हैं। हैल्परों को 1420 और आपरेटरों को 1600-1800 रुपये वेतन देते हैं।"

आटोपिन मजदूर : "ई.एस.आई. के पैसे तनखा में से काटते हैं पर कार्ड नहीं देते। चोट लगने पर कहते हैं कि बाहर इलाज करवाओ।"

एन-टेक कम्बसचन इंजिनियरिंग वरकर: "वेतन 1200-1300 रुपये से आरम्भ करते हैं। साइट पर फैब्रिकेशन का काम करते मजदूरों को अप्रैल-मई में 150 रुपये की इनक्रीमेन्ट दी लेकिन जून में वह काट दी।"

जैना कास्ट मजदूर : "जुलाई का वेतन आज 21 अगस्त तक नहीं दिया है। एक महीने से मशीनें बन्द कर रखी हैं। हम 50 परमानेन्ट के साथ ही 100 कैजुअलों व ठेकेदारों के वरकरों को भी फैक्ट्री में खाली बैठा कर रख रहे हैं।"

एलको स्टील वरकर : "हम 300 मजदूर हैं और हमें सप्ताह में कोई छुट्टी नहीं देते।"

प्रकाश एग्रो मजदूर : "दस घन्टे की ड्युटी है। साप्ताहिक छुट्टी भी नहीं देते।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "फस्ट प्लान्ट की नई कैन्टीन के नये मेनू में मैनेजमेन्ट ने भाव बढा दिये। इस पर 90 प्रतिशत से अधिक मजदूरों ने लिख कर दे दिया है कि नया मेनू हमें मँजूर नहीं है। मैनेजमेन्ट नई कैन्टीन शुरू नहीं कर पाई है।"

वी एक्स एल मजदूर : "आज कल हर रोज 16 घन्टे काम कर रहे हैं। परमानेन्ट को तो ओवर टाइम के पैसे डबल रेट से दे रहे हैं लेकिन 250 कैजुअल वरकरों को सिंगल रेट से देते हैं।"

कैनन इंडिया वरकर : "गेट पर कोई बोर्ड तक नहीं है। मैनेजमेन्ट ने 800-900 रुपये महीना वेतन पर 20-25 छोटे लड़के भी फैक्ट्री में लगा रखे हैं – रजिस्टर में उनके नाम तक नहीं लिखती। ढाई सौ बालिग मजदूरों में से भी कुछ को ही ई.एस.आई. कार्ड दिये हैं। साढे ग्यारह घन्टे की ड्युटी कम्पलसरी है और आधे वरकरों को न्यूनतम वेतन भी नहीं देते।"

बी.के.जी. वरकर : "ड्युटी 16 घन्टे की है। जिन्हें परमानेन्ट बताते हैं उन 20 को 1600 रुपये और 12 कैजुअलों को 1000-1200 रुपये महीना वेतन देते हैं।"

एस जी एल मजदूर : "वेतन में से पैसे काट रहे हैं पर 9.1.98 से पी.एफ. और ई.एस.आई. के पैसे जमा नहीं करवा रहे। नयों को तो ई.एस. आई कार्ड दिये ही नहीं हैं पर पुरानों के पास एस पी एल नाम वाले कार्ड हैं। इलाज के लिये जाने पर ई.एस.आई. में 72 नम्बर फार्म माँगते हैं। ड्युटी 12 घन्टे की लेते हैं पर लन्च के पैसे नहीं देते, चाय-मट्ठी भी नहीं देते।"

सेवा इन्टरनेशनल वरकर : "मार्च से वेतन नहीं दिया और मई में हम पाँच-छह सौ को बाहर कर दिया। हम ने सब जगह दरवाजे खटखटा लिये – मजदूरों की कहीं कोई सुनवाई नहीं है।"

एवरी इंडिया मजदूर : "कैन्टीन के हम 13 वरकरों को निकाल कर चाय की 4-5 मशीन लगा दी हैं। एक-एक मशीन पर दो-दो नये आदमी रख लिये हैं पर पुरानों को नहीं रख रहे। लेबर अफसर खा-पी गया है। तारीखों पर उल्टी-पल्टी बातें करके हमें कहता है कि नौकरी छोड़ो, हिसाब ले लो।"

गौरीशंकर स्टील बॉल्स मजदूर : "रजिस्टर और वाउचर पर दस्तखत कराते हैं तब उन पर पैसा नहीं लिखा होता लेकिन महीने-भर काम के देते 900-1000 रुपये ही हैं। तनखा बढाने की बोलने पर निकाल देते हैं और अब तो फैक्ट्री बन्द करने की बोल रहे हैं।"

बाटा फैक्ट्री वरकर : "तालाबन्दी को 6 महीने हो गये तब सरकार ने तालाबन्दी को गैरकानूनी घोषित किया है और बाटा मैनेजमेन्ट को अदालत ने फौरन स्टे दे दिया है। सरकार द्वारा ईस्ट इंडिया कॉटन मिल में तालाबन्दी को गैरकानूनी घोषित किये दो साल हो गये हैं पर वहाँ अब भी तालाबन्दी जारी है। कानून-वानून हमारी आँखों में धूल झोंकने के लिये हैं, इन से मजदूरों को कुछ नहीं मिलता।"

बाबा शूज मजदूर : "टोटल ठेकेदारी है। वेतन 1200-1300 ही देते हैं। पीछे लीडरों से बहुत ठोकरें खाई हैं। इसलिये हम यूनियन नहीं बना रहे क्योंकि यूनियन सौदेबाजी कर लेगी और हम मजदूर वहीं के वहीं पड़े रह जायेंगे। हम लोग तनखा बढवाने व अन्य बातों के लिये आपस में तालमेल करके दबाव डालने का रास्ता अपना रहे हैं।"

हाल-चाल यह है

(पेज एक का शेष)

पेमेन्ट अटक गई हैं। वरकरों पर वी आर एस कुछ कम थोप पा रही है मैनेजमेन्ट इसलिये 150 मजदूरों को सूरजपुर ट्रान्सफर की चर्चा है।

" एक तरफ कहते हैं कि 70 ट्रैक्टर प्रति शिफ्ट का प्रोडक्शन दो और दूसरी तरफ कहते हैं कि आई.ई.नोर्म्स दो। री- रोल व्हील लाइन में जो पहले 88 पीस देते थे उन से 190 माँग रहे हैं। हैवी जॉब है। वरकर बहुत ही परेशान हैं।

" स्वेच्छा से नौकरी कोई नहीं छोड़ रहा। परेशान और दुखी हो कर ही वी आर एस में हिसाब ले रहे हैं। फिर भी फार्मट्रैक में विदाई के समय सीनियर मैनेजर भाषण में 25-30 साल कम्पनी की सेवा के लिये आभार प्रकट करते हैं और खुशी से वी आर एस लेने का जिक्र कर सुखद भविष्य की शुभकामनायें देते हैं। कई बार मन करता है कि साहबों को मुँह पर बोल ही दें कि वरकर खुशी से नहीं बल्कि दुखी किये जाने की वजह से नौकरी छोड़ रहे हैं।

" हाल यह है कि सुबह- शाम तो आपस में बातें बिल्कुल नहीं कर पाते। लन्च में भी इतने थके होते हैं कि कम ही बात कर पाते हैं। कोई साथी ड्युटी आया है या नहीं इसका भी पता नहीं रहता।

" कहते हैं कि तनखा ज्यादा देते हैं पर वास्तव में बात उलट है। पँजाब ट्रैक्टर्स में मजदूरों की तनखा 1976 में एस्कोर्ट्स वरकरों से कम थी पर आज उनका वेतन 13000- 17500 है जबकि हमें साढे नो- दस हजार ही देते हैं।"

हैदराबाद इन्डस्ट्रीजं मजदूर : "हाल क्या बतायें ? 1999 में अब तक ही 4 वरकर कैन्सर, टी बी व दमा से मर गये हैं तथा बहुत- से मजदूर बीमार चल रहे हैं। मजबूरी है कि 8 घन्टे हमें खतरनाक एस्बेसटोस फाइबर को हर साँस के साथ फेफड़ों में लेना पड़ता है और चमड़ी तो एस्बेसटोस की मार में रहती ही है।"

मौर्या उद्योग वरकर : " सीनियर स्टाफ महिला वरकरों के साथ बदसलूकी से पेश आता है। खुद छेड़छाड़ करते हैं और पुरुष मजदूरों पर झूठे इल्जाम लगा कर निकाल देते हैं। सिलेन्डर पर पेन्ट चढाते समय बहुत गन्दी गैस लगती है— साँस लेना मुश्किल हो जाता है। दो भट्टियाँ फैक्ट्री के अन्दर बहुत धुँआ फैलाती हैं — कोई एग्जास्ट फैन नहीं लगाये हैं। ठेकेदार के वरकरों को वेतन 1200 रुपये महीना ही देते हैं।"

(बाकी पेज चार पर)

मुखौटे बदलते चेहरे

" खड़े हो रहे हो न इस बार भी लीडरी के चुनावों में ?"

"नहीं साहब। इस बार मैं जीत नहीं पाऊँगा।"

" क्यों क्या हुआ ? पिछले कई सालों से तुम्हारा अच्छा प्रभाव रहा है। काफी दबँग इन्सान हो तुम।"

" वो तो ठीक है साहब लेकिन इस बार हवा कुछ उल्टी चल रही है। वरकर कह रहे हैं कि इस बार सभी को चेन्ज करना है, कई साल हो गये हैं इन्हें। फस्ट प्लान्ट के चुनावों में देखा आपने — बिल्कुल नई कैबिनेट आई है। इस बार यहाँ भी वैसा ही होगा।"

" यहाँ फस्ट प्लान्ट की तरह बिल्कुल नहीं होगा। अभी भी वरकरों पर तुम्हारा पूरा होल्ड है।" सुनते ही महेन्दर ने दाँत निकाले, "बात तो आपकी ठीक है सर लेकिन....."

" लेकिन क्या ? अब भल्ला साहब से पूछ लो। तुम्हारे झापड़ से अभी तक गाल सहलाते रहते हैं। क्यों भल्ला साहब ?", कहते हुये अरोड़ा साहब भल्ला साहब की तरफ देखने लगे।

" यार महेन्दर, वरकरों में उसी थप्पड़ को भुनाओ। अभी वक्त है। और अगर वरकर भूल गये हैं कि तुम ने शॉप फ्लोर में सब के सामने भल्ला साहब को थप्पड़ मारा था तो हम भल्ला साहब को एक- आध महीने के लिये दुबारा शॉप फ्लोर में भेज देते हैं। इधर भल्ला आया, उधर तुम्हारी जीत पक्की। बस एक बार भल्ला से गाली- गलौज कर देना। लेकिन इस बार नो थप्पड़ ..... अन्डरस्टैन्ड ?"

"ठीक है साहब।", कहते हुये महेन्दर उठ कर खड़ा हो गया।

"अरे बैठो यार! और सुनो, किसी भी गाड़ी को चलने के लिये पैट्रोल की जरूरत होती है। ये लो", कहते हुये साहब ने ड्राअर से निकाल कर 50- 50 की एक गड्डी महेन्दर की तरफ फेंक दी।

" इस बार हरेक के घर दो- दो भिजवा देना। बहुत रहेंगे ?"

" बहुत हैं साहब। सभी तो पीते नहीं हैं।"

" ठीक है। अगर और जरूरत हो तो अगले हफ्ते आ जाना, मिल जायेंगे। लेकिन तुम्हें इस बार इस प्लान्ट से लीडरी में आना है। ओक्के ?"

" ओक्के सर।", कहते हुये महेन्दर बाहर निकल गया।

अरोड़ा भल्ला की तरफ मुखातिब हुये, " तुम सुनाओ भल्ला। स्टोर में कैसी कट रही है ?"

" साहब, बहुत गँदी जगह फेंक दिया आपने। पूरे दिन दिमाग खराब रहता है। साहब, अगर आपकी मेहरबानी हो जाये तो परचेज में ..."

" रिलैक्स। रिलैक्स भल्ला। हमें क्या मालूम नहीं है ? कल तुम्हें गियर डिविजन में ट्रान्सफर का लैटर मिल जायेगा।"

" ठीक है साहब। जैसी आपकी मर्जी", कहते हुये भल्ला साहब की नजर झुक गई।

" हमें इसकी अन्डरस्टैन्डिंग है भल्ला कि तुम परचेज में जाना चाहते हो। लेकिन दो महीने गियर डिविजन शॉप में रहो। जरा महेन्दर को लीडर बन जाने दो फिर देखते हैं। क्यों ?"

" ठीक है सर। लेकिन सर एक बात समझ में नहीं आई। आप इस आदमी को पसन्द नहीं करते सर, और अब इसे आप ही सपोर्ट कर रहे हैं।", भल्ला साहब ने कहा तो अरोड़ा साहब मुस्कुराये।

" हम किसी को पसन्द नहीं करते भल्ला। न इस साले महेन्दर को, न जिसकी सुन रहे हैं इस बार उस सूकटे मेही लाल को। और भल्ला, न ही हमारे परसनल फीलिंग्स की कोई अहमियत है। हम सब कम्पनी के लिये काम करते हैं। और वक्त का तकाजा है कि शॉप फ्लोर में एक बार फिर महेन्दर तुम से झगड़ा करे, तुम्हें गालियाँ दे और इस बार का चुनाव जीते। तुम्हें कोई ऑब्जेक्शन तो नहीं भल्ला ?"

"ऑब्जेक्शन तो कोई नहीं सर। गालियाँ खाने से आदमी घिसता थोड़े ही है। और फिर क्या पता साहब इसमें आप मेरा ही भला सोच रहे हों।"

"तुम्हारा ही भला नहीं भल्ला, कम्पनी का भला ... हम सब का भला। सोचो कैसे ?"

"अब साहब मेरे अन्दर इतना माइण्ड कहाँ ?"

" सुनो। वो जो दूबे है न — प्रकाश दूबे — साला बहुत टेढा आदमी है। फस्ट प्लान्ट में इस बार प्रधान बना है। और गियर डिविजन का मेही लाल उसका वो है — क्या कहते हैं साले को हिन्दी में — लँगोटिया। अगर इधर से मेही लाल जीत गया तो दोनों मिल कर कोई न कोई खुराफात रचेंगे। दूबे, मेरा मतलब प्रकाश दूबे जी को भी ले लेंगे हम अपने पँजे में। लेकिन जब तक नहीं आता तब तक का इन्तजार तो हम नहीं कर सकते न। साँप पालने से पहले उसके जहर के दाँत तोड़ने जरूरी होते हैं। दूबे का दाँत मेही लाल है। वह अभी लीडरी में नहीं आना चाहिये। इसलिये हम दुबारा महेन्दर को ला रहे हैं। समझे तुम ?" " समझ गया सर। बिल्कुल समझ गया।"

— जसवन्त

कम्पनियाँ किसी की नहीं होती

- 21 अगस्त को **एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक** से 3 मैनेजर नौकरी से निकाल दिये और 146 मैनेजरों व सुपरवाइजरों को निकालने की चर्चा है।
- **एस्कोर्ट्स जे सी बी** से 18 अगस्त को 16 मैनेजरों को नौकरी से निकाल दिया गया।
- 26 अगस्त से बन्द **एस्कोर्ट्स यामाहा** के 6 सितम्बर को खुलते ही 50 मैनेजरों को तो राजदूत प्लान्ट से ही निकालने की चर्चा है।
- **एस्कोर्ट्स थर्ड प्लान्ट** से आधे मैनेजरों व सुपरवाइजरों को निकालने की चर्चा है।

और मैनेजर व सुपरवाइजर हैं कि 5 हजार कैजुअल वरकरों को एस्कोर्ट्स ग्रुप से निकालने में अगुआई करके अब एस्कोर्ट्स के हर प्लान्ट से 40- 50 प्रतिशत परमानेन्ट मजदूरों को निकालने के लिये कसरतें कर रहे हैं।

अनुभव की बातें

बाटा फैक्ट्री मजदूर : " तालाबन्दी के बाद भी मैनेजमेन्ट का पक्ष इस प्रकार से रखा जा रहा है कि एक समय पर कुछ मजदूरों को ही ज्यादा नुकसान नजर आये। कभी कनवेयर के वरकरों को निशाने पर दिखाया तो कभी 310 डिपार्ट वालों को। कभी मिक्सचर वालों को तो कभी अपर सिलाई वालों को। हर बार बात ऐसे रखी जाती है कि यह चन्द वरकर मान लें तो फैक्ट्री खुल जाये। ना- नुकुर कर एक डिपार्ट के वरकर चुप होते हैं तो दूसरी डिपार्ट का मामला सामने ला देते हैं। इस प्रकार सब मजदूरों का कचूमर निकालने पर तुले हैं। अब तालाबन्दी खोलने से पहले हम से बहुत बातों पर " हाँ" करवायेंगे। फैक्ट्री खुलने पर हमें 1982-83 वाले चुपचाप विरोध के तरीके अधिक होशियारी से अपनाने होंगे ताकि हमारी साँसें चलती रहें। 1982 की एग्रीमेन्ट के बावजूद तब डेढ साल झख मार कर बाटा मैनेजमेन्ट को आटोमैटिक मशीनें उखाड़नी पड़ी थी और मैनेजमेन्ट की छँटनी स्कीम भी फेल हो गई थी।"

हिल्टा (निकीताशा) वरकर : " मजदूर समाचार पढ कर भी और हमारे यहाँ अब जो एग्रीमेन्ट हुई है उसे देखते हुये यही कहा जा सकता है कि अब एग्रीमेन्टें मैनेजमेन्टों के ही फायदे में हैं। टोटल करने के बाद हम तो इसी नतीजे पर पहुँचे हैं कि एग्रीमेन्टों में मजदूरों के हित की कोई बात नहीं होती।"

लखानी शूज मजदूर : " हड़ताल करवा कर मैनेजमेन्ट ने 1996 में 1400 मजदूरों को निकाला था। अभी भी 60-70 का केस चन्डीगढ में अटका पड़ा है। अभी तक कुछ नहीं हुआ। मजदूरों के लिये तो लीडर और अफसर सब बेकार हैं।"

एवरी शैंक वरकर : " बल्लभगढ से प्लान्ट के नोयडा ट्रान्सफर का मजदूरों ने विरोध किया। लीडरों और मैनेजमेन्ट की कलकत्ता तक में मीटिंग हुई पर कुछ नहीं हुआ। नोयडा जाना पड़ा। वहाँ जाते ही मैनेजमेन्ट ने कैन्टीन खत्म कर दी और ट्रान्सफर के एवज में जो 300 रुपये दिये थे उन्हें बस भाड़े के रूप में काट लिया।"

डेल्टन केबल्स मजदूर : " आजकल काम कम है। ऐसे में लीडरों ने स्लो डाउन की घोषणा कर हमारा और कबाड़ा कर रखा है।"

भारत मशीन टूल्स वरकर : " एग्रीमेन्ट द्वारा उत्पादन दुगने से भी ज्यादा कर लिया पर पैसे देने की बात आई तो मैनेजमेन्ट ने इनकार कर दिया।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : " 30 साल की सर्विस वाले मजदूरों को दो-दो मशीनें चलाने को मजबूर कर रहे हैं। शिफ्ट खत्म होने तक बेहाल हो जाते हैं। फिर भी, चौतरफा माहौल को देखते हुये 50-52 वर्ष आयु वाले यह वरकर कह रहे हैं कि मैनेजमेन्ट चाहे जितना परेशान कर ले, हम नौकरी से इस्तीफे नहीं देंगे।"

जे वी इलेक्ट्रोनिक्स वरकर : " काम कम होने पर मैनेजमेन्ट ने हफ्ते में दो छुट्टी देनी शुरू कर दी पर महीने में मिलते अटेन्डेन्स अलाउन्स तथा 4 घन्टे का गेट पास बन्द कर दिये। काम ज्यादा होने पर मैनेजमेन्ट ने मई से सप्ताह में 6 दिन काम लेना शुरू कर दिया लेकिन अटेन्डेन्स अलाउन्स और गेट पास बन्द ही रखे। इस पर हम महिला व पुरुष मजदूरों ने एक-एक कर तथा समूह में डिपार्टमेन्टों में साहबों को टोकना शुरू किया। तँग हो कर उन्होंने परसनल मैनेजर के पास जाने को कहा। हम में से कोई न कोई रोज उन साहब के सिर पर खड़े होने लगे तो अपना पिण्ड छुड़ाने के लिये परसनल मैनेजर ने जनरल मैनेजर से बात करने को कहा। इक्के-दुक्के व पाँच-सात में हम जनरल मैनेजर के पास जा कर बन्द किये अलाउन्स व गेट पास माँगने लगे। रोज-रोज यह होने लगा तो साहब ने परेशान हो कर कहा कि अपने लीडरों को बात करने भेजो। मजदूरों ने जवाब दिया कि न हमारी कोई यूनियन है और न हमारे कोई नेता हैं। दो बार तो जनरल मैनेजर के दफ्तर के अन्दर और बाहर शान्त खड़े स्त्री-पुरुष मजदूरों की भीड़ लग गई। चार महीनों के हमारे इस आने-जाने से तँग हो कर बड़े साहब को पहली सितम्बर से हमारी अटेन्डेन्स अलाउन्स और 4 घन्टे का गेट पास बहाल करने का आदेश देना पड़ा है।"

अपने-अपने कारगिल

एस्कोर्ट्स मजदूर : " मैनेजमेन्ट ने कारगिल फन्ड के लिये एक दिन की दिहाड़ी काटने का दुबारा नोटिस लगाया। फस्ट प्लान्ट में हम सब मजदूरों ने दूसरी बार भी लिख कर दे दिया कि कारगिल फण्ड के लिये हमारे पैसे नहीं काटे जायें। फस्ट प्लान्ट में मैनेजमेन्ट अपनी मनमानी नहीं कर पाई।

" जुलाई के वेतन में से एक दिन की दिहाड़ी मैनेजमेन्ट ने कारगिल फण्ड के लिये काट ही ली। पहले वाले की तरह का नोटिस लगाया था। कुछ वरकर लिख कर मना करने गये तो परसनल मैनेजर बोला कि यह ठीक नहीं कर रहे और वे वरकर लौट गये। प्लान्ट में सब मजदूरों के पैसे मैनेजमेन्ट ने काट लिये।

" हमारे प्लान्ट में कुछ वरकरों ने कारगिल फण्ड के लिये मैनेजमेन्ट के दूसरे नोटिस के जवाब में भी लिख कर दे दिया कि मैनेजमेन्ट हमारे पैसे नहीं काटे। उन मजदूरों पर देशद्रोही और पाकिस्तानी एजेन्ट के फिकरे कसे गये। फैक्ट्री के अन्दर और फैक्ट्री के बाहर हर मजदूर का हर रोज कई-कई छोटे-बड़े कारगिलों से वास्ता पड़ता है। कदम-कदम पर हमें काटते-पीटते-छलनी करते मानवद्रोही वर्तमान से निपटना हमारे लिये कब मुख्य बात बनेगी?"

हाल-चाल यह है (पेज तीन का शेष)

कबीरा इन्डस्ट्रीज मजदूर : "धकाधक चल रही है। खूब मुनाफा हो रहा है पर हमारी तनखा नहीं बढाते। बाप-बेटे हर समय सिर पर खड़े रहते हैं, साँस लेनी दूभर कर रखी है। ज्यादा काम आ जाता है तब कैजुअल भर लेते हैं और काम कम होते ही कैजुअलों को बाहर कर देते हैं। हम परमानेन्टों का बुरा हाल है। काम की कोई लिमिट नहीं है। कहते हैं कि करना है तो रहो नहीं तो जाओ।"

टेकमसेह मजदूर : " अभी 1400 वरकर हैं और हमारा अनुमान है कि 900 से कम को ही रखेंगे। बहाना होगा ओजोन परत को नुकसान पहुँचाने वाले कम्प्रेसरों को बन्द करना – पर्यावरण संरक्षण के नाम पर अनुमति होगी – और छँटनी मजदूरों की। बल्लभगढ़ प्लान्ट में नये कम्प्रेसरों का उत्पादन शुरू हो गया है और वहाँ 100 नये लड़के ट्रेनी भी रख लिये हैं। एग्रीमेन्ट द्वारा बढाया 31 प्रतिशत उत्पादन वैसे ही कमर तोड़ रहा था, मशीन के साइकिल टाइम के बहाने 31 प्रतिशत से ज्यादा के लिये दबाव डालते हैं। आठ घन्टे इस से उस मशीन पर नाचना पड़ता है – एक वरकर को दो-दो मशीन चलाने को कहते हैं। रेफ्रिजरेटरों का निकट आता ऑफ सीजन नौकरी के लिये बढता खतरा लिये है। छँटनी के लिये माहौल बनाने के सिलसिले में पुराने मजदूरों को छोटी-छोटी बात पर मैनेजमेन्ट ने सस्पेन्ड करना और लीडरों ने माफीनाम लिखवाना की जुगलबन्दी शुरू हो गई है। मैनेजमेन्ट की छँटनी स्कीम को कैसे फेल करें – इसी उधेड़-बुन में हम लगे रहते हैं।"

झालानी टूल्स वरकर : " हाल-चाल क्या बतायें? हमारे हिसाब-किताब को डुबोने की तिकड़में तेज हो गई हैं। जून 98 में अपनी कमेटियाँ बना कर मैनेजमेन्ट ने खुला ताँडव शुरू किया। फैक्ट्री के अन्दर और गेटों पर मजदूरों की पिटाई का सिलसिला एक मजदूर की हत्या तक पहुँचा। ज्यादा बदनामी होने पर मैनेजमेन्ट ने अपनी कमेटियों को दिसम्बर 98 में एच एम एफ की कमेटियाँ घोषित किया। हमारे पैसे हड़पने के लिये इन कमेटियों से अपने ही खिलाफ कोर्ट केस करवाने के लिये मैनेजमेन्ट ने जबरन 50-50 रुपये हर वरकर के वेतन में से काटे। इधर अचानक इन कमेटियों को भँग करने का फैक्ट्री में नोटिस लगाया है। हमारे 40 करोड़ रुपये हड़पने के लिये कमेटियों के सरगनों के साथ मैनेजमेन्ट ने कोई नया जाल बुना है। हम क्या-कुछ कर सकते हैं?"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी
एन. आई .टी. फरीदाबाद–121001

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।